
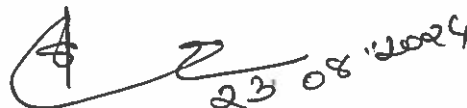


CETRIFICATE

I certify that the thesis entitled **CHANDRAKANTA KE UPANYASON MEIN STRI SWATVA KE VIVIDH ROOP** submitted for the degree of Doctor of Philosophy (Ph.D.) by **Shamecna T** is the record of research work carried out by her during the period from 2021 to 2024 under my guidance and supervision, and the work has not formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associateship, Fellowship, or other Titles in this University or any other University or other Institution of Higher Learning.


Signature of the HoD

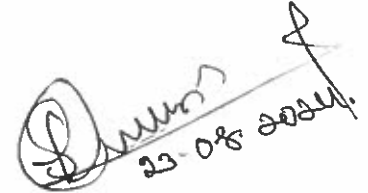

Signature of the Supervisor


Signature of Dean

School of Arts and Social Sciences

DECLARATION

I declare that the thesis entitled **CHANDRAKANTA KE UPANYASON MEIN STRI SWATVA KE VIVIDH ROOP** submitted by me for the degree of Doctor of Philosophy (Ph.D.) is the record of work carried out by me during the period from 2021 to 2024 under the guidance of **Dr.Shobhana Kokkadan**, Professor, Head of the Department of Hindi & Dean of Arts and Social Sciences and has not formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associateship, Fellowship, Titles in this University or any other University or other similar Institution of Higher Learning.

A handwritten signature in black ink, appearing to be 'Shobhana Kokkadan', written over a diagonal line. Below the signature, the date '22-08-2024' is written in a similar cursive style.

Signature of the Candidate

आभार प्रदर्शन

सर्वप्रथम मैं अविनाशिलिंगम इंस्टिट्यूट फॉर होम साइन्स एण्ड हायर एजुकेशन फॉर वुमन, कोयम्बतूर के माननीय कुलाधिपति महोदय डॉ. टी. एस. के मीनाक्षी सुंदरम, कुलपति महोदया डॉ. वी. भारती हरिशंकर, कुलसचिव महोदया डॉ. एच. इन्दु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने मुझे हिन्दी विभाग में पी. एच. डी प्रवेश दिलाते हुए इस शोध कार्य करने का सुअवसर प्रदान किया।

प्रस्तुत शोध का कार्यान्वयन संकायाध्यक्षा, विभागाध्यक्षा एवं शोध निर्देशिका महोदया डॉ. शोभना कोक्काडन के विद्वत्तापूर्ण दिशा-निर्देशन एवं प्रोत्साहन में सम्पन्न हुआ है। मेरे इस अध्ययन का सम्पूर्ण श्रेय मैं अपने गुरुवर्य डॉ. शोभना कोक्काडन जी को देती हूँ। आपके मार्ग दर्शन, सुझाव, सहयोग, प्रेरणा एवं स्नेह के लिए मैं तहे दिल से कृतज्ञ एवं आभारी रहूँगी।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का कारणीभूत आदरणीय श्रीमती चन्द्रकान्ताजी का श्रेष्ठतम योगदान प्रस्तुत कार्य को गौरवान्वित किया है जिनके उपन्यासों ने मेरी अन्तरात्मा पर इतना जबर्दस्त प्रभाव डाला कि उस पर शोधकार्य करने को मैं मज़बूर हो गयी हूँ। एम.फिल करते समय उनके समस्त उपन्यासों का गहन अध्ययन नहीं हो पाया था। लेकिन पी. एच. डी के इस शोध कार्य हेतु उनके समस्त उपन्यासों का गहराई से अध्ययन करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है। शोधकार्य के दौरान उनसे फ़ोन पर बात करने का जो मौका मिला है इस पर मैं अपने आपको धन्य समझूँगी। आवश्यक सामग्रियाँ प्रदान करने तथा समय समय पर सम्बद्ध रचनाओं से सम्बन्धित विशेष जानकारियाँ उनके साथ हुए साक्षात्कार के ज़रिए प्रदान करने के लिए उनके प्रति मैं अत्यन्त शुक्रगुंज़ार हूँ। माँ जैसी ममता मयी चन्द्रकान्ताजी के प्रति अपनी हृदय की भावना को अभिव्यक्त करने के लिए मेरे पास अलफ़ाज़ नहीं हैं।

हिन्दी विभाग की प्रोफेसर डॉ. शशिप्रभा जैन और प्रोफेसर शांति को आभार अर्पित करती हूँ जिनका आशीश मेरे ऊपर सदा रहा। अविनाशिलिंगम इंस्टिट्यूट फॉर होम साइन्स एण्ड हायर एजुकेशन फॉर वुमन, कोयम्बतूर की पुस्तकालयाध्यक्षा एवं वहाँ के कर्मचारियों के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने पूरे शोध प्रबन्ध लेखन केलिए सामग्री प्रदान कर मेरी सहायता की। इसके अतिरिक्त कालिकट विश्वविद्यालय और केरल विश्वविद्यालय के सेंट्रल लाइब्रेरी एवं विभागीय पुस्तकालय से भी मैं खूब लाभान्वित हुई हूँ। वहाँ के कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों के प्रति भी मैं अभारी रहूँगी।

मुझे इस मंज़िल तक पहुँचाने में मेरे माता-पिता, पति का योगदान अमूल्य रहा है। उनके प्रार्थना प्रोत्साहन एवं शुभाशीश हमेशा मुझमें एक नयी ऊर्जा एवं उमंग प्रदान की।

सबसे ऊपर मैं ईश्वर के प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ। ईश्वर की कृपा के कारण ही मैं यह शोध प्रबन्ध समय पर प्रस्तुत कर सकी। प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप में जिनसे मुझे सहयोग प्राप्त हुआ उन सभी के प्रति मैं शुक्रगुंजार हूँ। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में कहीं त्रुटियाँ या कमियाँ आ गई हैं तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। चन्द्रकान्ता के उपन्यास साहित्य के प्रति रुचि रखने वाले अध्येताओं एवं अनुसन्धाताओं को प्रस्तुत शोध प्रबन्ध से फायदा मिलेगा तो मैं अपने आपको धन्य मानूँगी।

सविनय एवं सधन्यवाद

षमीना. टी